Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.49366, MAR–APR, 2018, VOL- 5/44

बरेली जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था की छात्राओं के सशक्तिकरण स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

अमिता गुप्ता[1], Ph. D. व शिखा मिश्रा[2]

[1]*Assistant professor, Department of Teacher Education, Bareilly College, Bareilly*

[2]*M.Ed. Student (2015-17), Department of Teacher Education, Bareilly College, Bareilly*

Abstract

प्रस्तुत अध्ययन में बरेली जनपद के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था की छात्राओं के सशक्तिकरण स्तर को ज्ञात करने का प्रयत्न किया गया है | शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में 126 छात्राओं का चयन स्तरीकृत न्यादर्श चयन विधि द्वारा किया जिसमें 62 छात्राएं यू०पी० बोर्ड व 64 सी०बी०एस०ई० बोर्ड की हैं व 65 छात्राएं ग्रामीण क्षेत्र की तथा 61 शहरी क्षेत्र की हैं, 65 छात्राएं हिन्दू धर्म की तथा 61 अन्य धर्मों की है | शोधार्थी ने adolescent girls empowerment scale का उपयोग उपकरण के रूप में किया है जो की डॉ देवेन्द्र सिंह सिसोदिया व कल्पना सिंह द्वारा निर्मित प्रमापीकृत उपकरण है इसमें कुल 7 क्षेत्र तथा 49 पद हैं | परिकल्पना परीक्षण तथा आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा ' t ' परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है | अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि महिला सशक्तिकरण का स्तर ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में शहरी क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा निम्न है | यू०पी० व सी०बी०एस०ई० बोर्ड की छात्राओं में महिला सशक्तिकरण स्तर समान पाया गया | हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में सार्थक अंतर नहीं पाया गया | उच्च आर्थिक स्थिति वाले परिवारों की छात्राओं का सशाक्तिकरण स्तर निम्न आर्थिक स्थिति वाली छात्राओं की तुलना में अधिक पाया गया |

मूल शब्द – *उच्च माध्यमिक विद्यालय, किशोरावस्था, सशक्तिकरण स्तर*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना :-

कहा जाता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं परन्तु आज भी देखा जाता है कि हमारे समाज में महिलाओं के साथ होने वाले अपराधों की संख्या दिन प्रतिदिन बढती ही जा रही है | प्रश्न यह उठता है कि ऐसा क्यूँ हो रहा है क्या हमारे देश में महिलाओं की सुरक्षा के लिए कोई कानून नहीं है या महिलाओं को कोई अधिकार प्राप्त नहीं हैं ? हमारे देश में महिलाओं को पुरुषों के सामान अधिकार प्राप्त हैं तथा भारतीय संविधान में महिला सुरक्षा व अधिकारों की रक्षा के लिए कई प्रावधान किये गए हैं परन्तु जागरूकता के आभाव में तो कभी परिवार की समाज में इज्जत की खातिर महिलाएं स्वयं के साथ होने वाले अन्याय व अत्याचार के खिलाफ आवाज नहीं उठा पातीं | अतः आज महिला सशक्तिकरण एक प्रमुख विषय है जिसके

प्रति समाज के युवा वर्ग को मुख्य रूप से जागरूक होना चाहिए | प्रस्तुत अध्ययन में महिला सशक्तिकरण का मापन कुल सात आयामों पर किया गया है जो कि अग्रलिखित हैं -

1. अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व (Power and Entitlement)
2. स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास (Autonomy and Self – Reliance)
3. निर्णय प्रक्रिया (Decision making)
4. भागीदारी (Participation)
5. क्षमता विकास (Capacity Building)
6. सामाजिक, राजनितिक व कानूनी जागरूकता (Social, Political and Legal awareness)
7. सुचना माध्यमों की उपयोगिता (Exposure to information media)

शर्मा,(2015) ने अध्ययन में पाया कि शहरी क्षेत्र के बी० एड० प्रशिक्षुओ में स्त्री शिक्षा व सुरक्षा के प्रति अभिवृत्ति का स्तर ग्रामीण बी० एड० प्रशिक्षुओं में स्त्री शिक्षा व सुरक्षा के प्रति जागरूकता स्तर से उच्च प्राप्त हुआ | शेट्टार(2015) द्वारा किये गए अध्ययन में कहा गया की महिलाओं का सशक्तिकरण इक्कीसवीं सदी की एक महत्त्वपूर्ण चिंताओं में से एक है | लेकिन वास्तव में आज भी महिला सशक्तिकरण एक भ्रम ही है | आज भी समाज में महिलाएं आसानी से सामजिक बुराइयों का शिकार हो रही हैं | श्रीनिवास,डी० (2015) "रीसेंट ट्रेंड्स इन वुमेन एम्पावरमेंट : अन एनालिसिस" में कहा गया कि लिंग न्याय, शारीरिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, कानूनी सशक्तिकरण तथा राजनीतिक सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्य, नागरिक समाज, विश्विद्यालयों,मीडिया संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य संस्थानों को मिलकर काम करने की आवश्यकता है | दत्ता,(2014) "स्टडी ऑफ़ वुमेन एम्पावरमेंट इन दा डिस्ट्रिक्ट ऑफ़ बांकुरा" है , में पाया गया कि यहाँ सैंपल की 40% महिलाओं ने परिवार नियोजन को अपनाया नहीं है तथा घरेलू हिंसा एक प्रमुख समस्या है| केवल एक तिहाई महिलाएं घरेलू व सामुदायिक स्तर पर सशक्त हैं |

प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता व महत्त्व यह है की आज युवा पीढ़ी यदि जागरूक होगी तभी कल के सशक्त भारत का निर्माण संभव है तथा महिलाओं के सशक्त होने का सीधा सम्बन्ध राष्ट्र की प्रगति से होता है | अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों द्वारा हम ज्ञात क्र सकते हैं की आज किशोरावस्था की छात्राओं में महिला सशक्तिकरण के प्रति क्या दृष्टिकोण है तथा वे स्वयं कितनी सशक्त व जागरूक हैं साथ ही आवश्यक क्षेत्रों में सुधार के लिए प्रयत्न भी किये जा सकेंगे |

अध्ययन के उद्देश्य -

1. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की छात्राओं के मध्य सशक्तिकारण स्तर की तुलना करना |
2. हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर की तुलना करना |
3. यू०पी० बोर्ड व सी०बी०एस०ई०बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर की तुलना करना |
4. उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर की तुलना करना |

अध्ययन की परिकल्पनाएं :-

1. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
2. हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर में सार्थक अंतर नहीं है |
3. यू०पी० बोर्ड व सी०बी०एस०ई०बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में सार्थक अंतर नही है |
4. उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

अनुसंधान क्रियाविधि :-

प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है |

जनसँख्या :-

प्रस्तुत शोध में बरेली जनपद के विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 13 से 18 वर्ष की छात्राओं को जनसँख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है |

न्यादर्श :-

शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग 126 छात्राओं के चयन में किया है | जिनमें कुल 62 यू०पी० बोर्ड व 64 सी०बी०एस०ई० बोर्ड की छात्राएं हैं | जिनमें से 65 ग्रामीण क्षेत्र की व 61 शहरी क्षेत्र की, 65 हिन्दू व 61 अन्य धर्मों की तथा 67 उच्च आर्थिक स्थिति व 59 निम्न आर्थिक स्थिति की हैं |

प्रयुक्त उपकरण :-

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने ADOLESCENT GIRLS EMPOWERMENT SCALE का प्रयोग उपकरण के रूप में किया है जो डॉ. देवेन्द्र सिंह सिसोदिया व डॉ. अल्पना सिंह द्वारा निर्मित प्रमापीकृत परीक्षण है| यह उपकरण 13 से 18 वर्ष तक की छात्राओं में सशक्तिकरण स्तर मापने हेतु है इसमें कुल 7 क्षेत्र तथा 49 पद हैं | परीक्षण की विश्वसनीयता 0.71 है |

	ग्रामीण छात्राएं N_1 = 65		शहरी छात्राएं N_2 = 61			
आयाम	M_1	SD_1	M_2	SD_2	**t-मान**	**सार्थकता स्तर**
1.अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व	24.384	4.649	29.213	4.239	6.09	सार्थक अंतर है
2.स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास	24.476	4.593	29.393	4.231	6.19	सार्थक अंतर है
3.निर्णय प्रक्रिया	24.646	4.855	29.377	4.34	5.77	सार्थक अंतर है
4.भागीदारी	24.076	5.078	29.426	4.264	6.41	सार्थक अंतर है
5.क्षमता विकास	24.323	4.796	29.524	3.901	6.69	सार्थक अंतर है
6.सामाजिक,राजनीतिक व कानूनी जागरूकता	24.323	5.235	29.278	4.389	5.77	सार्थक अंतर है
7.सूचना माध्यमों की उपयोगिता	24.338	4.874	29.18	4.283	5.95	सार्थक अंतर है
समग्र मान	**170.56**	**34.08**	**205.39**	**29.64**	**6.13**	**सार्थक अंतर है**

तालिका :1 ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की छात्राओं के मध्य सशक्तिकारण स्तर की तुलना

<u>सांख्यिकीय प्रविधियां :-</u>

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी-परिक्षण का प्रयोग किया गया है |

<u>प्रदत्तों का विश्लेषण तथा अर्थापन :-</u>

तालिका संख्या -1 में प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण छात्राओं का मापे गए प्रत्येक आयाम - अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व, स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास, निर्णय प्रक्रिया,भागीदारी, क्षमता विकास, सामाजिक राजनीतिक व कानूनी जागरूकता, सूचना माध्यमों की उपयोगिता तथा समग्र मान के लिए प्राप्त मध्यमान (क्रमशः M_1= 24.384, 24.476, 24.646, 24.076, 24.323, 24.323, 24.338, 170.56) शहरी क्षेत्र की छात्राओं के इन आयामों के लिए प्राप्त मध्यमान (क्रमशः M_2= 29.213, 29.393, 29.377, 29.426, 29.524, 29.278, 29.18, 205.39) की तुलना में कम है जो यह दर्शाता है कि प्रत्येक आयाम तथा समग्र स्कोर में किशोरावस्था की ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

निम्न है | इसके साथ ही सार्थकता स्तर पर भी प्रत्येक आयाम के साथ ही समग्र स्कोर में भी दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर पाया गया चूँकि प्रत्येक आयाम तथा समग्र स्कोर के लिए प्राप्त टी-मान (क्रमशः 6.09, 6.19, 5.77, 6.41, 6.69, 5.77, 5.95, 6.13) 124 स्वतंत्रता की कोटि पर 0.05 व 0.01 दोनों स्तरों के तालिका मान से अधिक है अतः प्रथम शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है |

ग्राफ -1 ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर की आयाम अनुसार प्राप्त आंकड़ों की तुलना

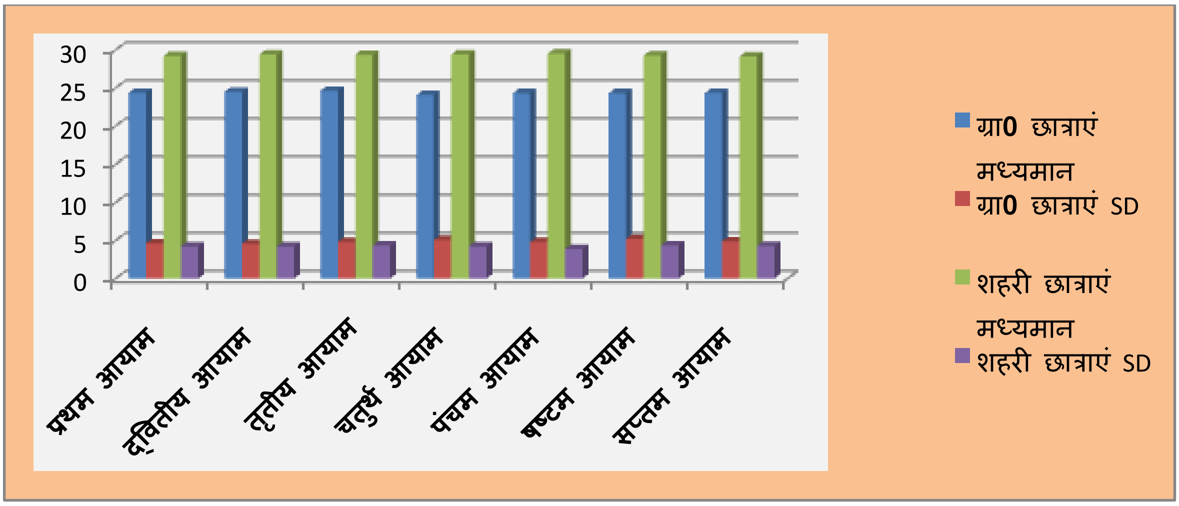

तालिका : 2 हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर की तुलना

	हिन्दू-धर्म $N_1 = 65$		अन्य-धर्म $N_2 = 61$			
आयाम	M_1	SD_1	M_2	SD_2	**t-मान**	**सार्थकता स्तर**
1.अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व	26.701	4.879	26.861	5.275	0.177	सार्थक अंतर नहीं है
2.स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास	26.598	4.779	26.865	5.189	0.299	सार्थक अंतर नहीं है
3.निर्णय प्रक्रिया	26.643	4.877	26.786	5.261	0.157	सार्थक अंतर नहीं है
4.भागीदारी	26.699	4.689	26.89	5.274	0.214	सार्थक

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

						अंतर नहीं है
5.क्षमता विकास	26.782	4.779	26.861	5.271	0.087	सार्थक अंतर नहीं है
6.सामाजिक,राजनीतिक व कानूनी जागरूकता	26.702	4.879	26.9	5.276	0.294	सार्थक अंतर नहीं है
7.सूचना माध्यमों की उपयोगिता	26.701	4.862	26.861	5.3	0.176	सार्थक अंतर नहीं है
कुल मान	**186.82**	**33.764**	**188.02**	**36.846**	**0.189**	**सार्थक अंतर नहीं है**

तालिका संख्या: 2 में प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि हिन्दू धर्म की छात्राओं का मापे गए प्रत्येक आयाम - अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व, स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास, निर्णय प्रक्रिया,भागीदारी, क्षमता विकास, सामाजिक राजनीतिक व कानूनी जागरूकता, सूचना माध्यमों की उपयोगिता तथा समग्र मान के लिए प्राप्त मध्यमान (क्रमशः M_1= 26.701, 26.598, 26.643, 26.699, 26.782, 26.702, 26.701, 186.82) तथा अन्य धर्मों की छात्राओं के इन आयामों के लिए प्राप्त मध्यमानों (क्रमशः M_2 = 26.861, 26.865, 26.786, 26.89, 26.861, 26.9, 26.861, 188.02)के मध्य महत्त्वपूर्ण अंतर नहीं है तथा ये आंकड़े लगभग सामान हैं जो यह दर्शाते हैं कि हिन्दू धर्म की छात्राओं तथा अन्य धर्मों की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर सामान है |

इसके साथ ही सार्थकता स्तर पर भी प्रत्येक आयाम के साथ ही समग्र स्कोर में भी दोनों समूहों के मध्य सार्थक अंतर नहीं पाया गया चूँकि प्रत्येक आयाम तथा समग्र स्कोर के लिए प्राप्त टी-मान (क्रमशः 0.177, 0.299, 0.157, 0.214, 0.087, 0.294, 0.176, 0.189) स्वतंत्रता की कोटि 124 पर 0.05 व 0.01 दोनों स्तरों के तालिका मान से कम है अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना – “हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है|” स्वीकार की जाती है |

ग्राफ- 2 हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर का आयाम अनुसार तुलनात्मक अध्ययन

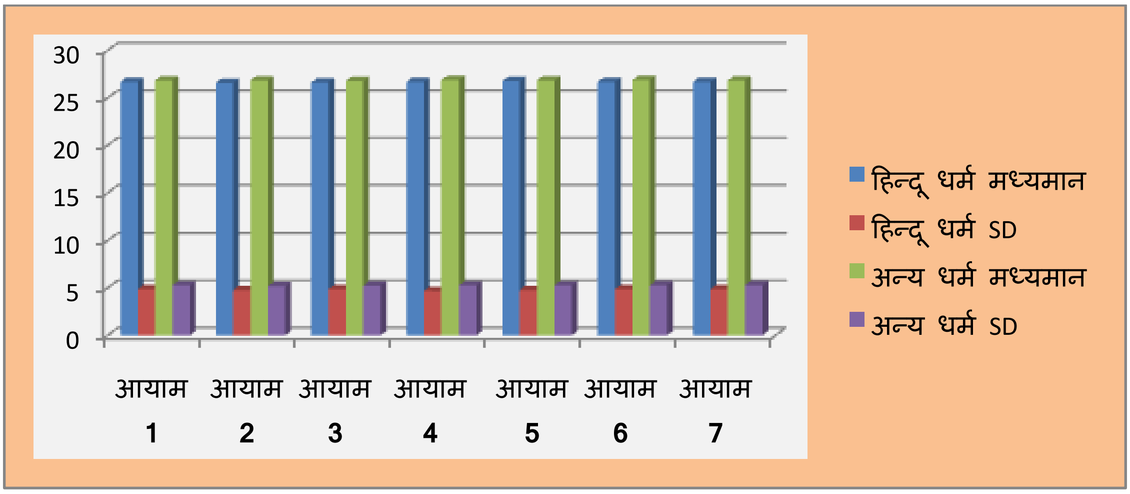

तालिका :3 यू०पी० बोर्ड व सी०बी०एस०ई०बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर की तुलना

	यू०पी० बोर्ड $N_1 = 62$		सी०बी०एस०ई०बोर्ड $N_2 = 64$			
आयाम	M_1	SD_1	M_2	SD_2	t-मान	सार्थकता स्तर
1.अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व	26.548	4.633	25.921	5.349	0.70	सार्थक अंतर नहीं है
2.स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास	25.725	4.731	26.218	5.328	0.55	सार्थक अंतर नहीं है
3.निर्णय प्रक्रिया	27.79	4.798	26.109	5.419	1.84	सार्थक अंतर नहीं है
4.भागीदारी	27.00	5.153	26.156	5.277	0.90	सार्थक अंतर नहीं है
5.क्षमता विकास	25.983	5.029	26.187	5.356	0.22	सार्थक अंतर नहीं है
6.सामाजिक,राजनीतिक व कानूनी जागरूकता	27.612	5.061	26.00	5.371	1.73	सार्थक अंतर नहीं है
7.सूचना माध्यमों की उपयोगिता	24.403	5.029	25.984	5.274	1.72	सार्थक अंतर नहीं है
कुल मान	**185.06**	**34.43**	**182.57**	**37.375**	**0.388**	**सार्थक अंतर नहीं है।**

तालिका संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि यू० पी०बोर्ड की छात्राओं का मापे गए प्रत्येक आयाम - अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व, स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास, निर्णय प्रक्रिया,भागीदारी, क्षमता विकास, सामाजिक

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

राजनीतिक व कानूनी जागरूकता, सूचना माध्यमों की उपयोगिता तथा समग्र मान के लिए प्राप्त मध्यमान (क्रमशः M_1 = 26.548, 25.725, 27.79, 27, 25.983, 27.612, 24.403,185.06) तथा सी० बी० एस० ई० बोर्ड की छात्राओं के प्रत्येक आयाम के मध्यमान (क्रमशः M_2 = 25.921, 26.218, 26.109, 26.156, 26.187, 26, 25.984, 182.57) के मध्य सार्थक अंतर नहीं है चूँकि दोनों समूहों के टी- मान (क्रमशः 0.70, 0.55, 1.84, 0.90, 0.22, 1.73, 1.72, 0.388) 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर तालिका मान से कम हैं (df = 124) अतः तृतीय शून्य परिकल्पना- " यू०पी० बोर्ड व सी०बी०एस०ई०बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में सार्थक अंतर नही है " स्वीकार की जाती है |

ग्राफ- 3 :यू०पी०बोर्ड व सी०बी०एस०ई० बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर की आयाम अनुसार तुलना

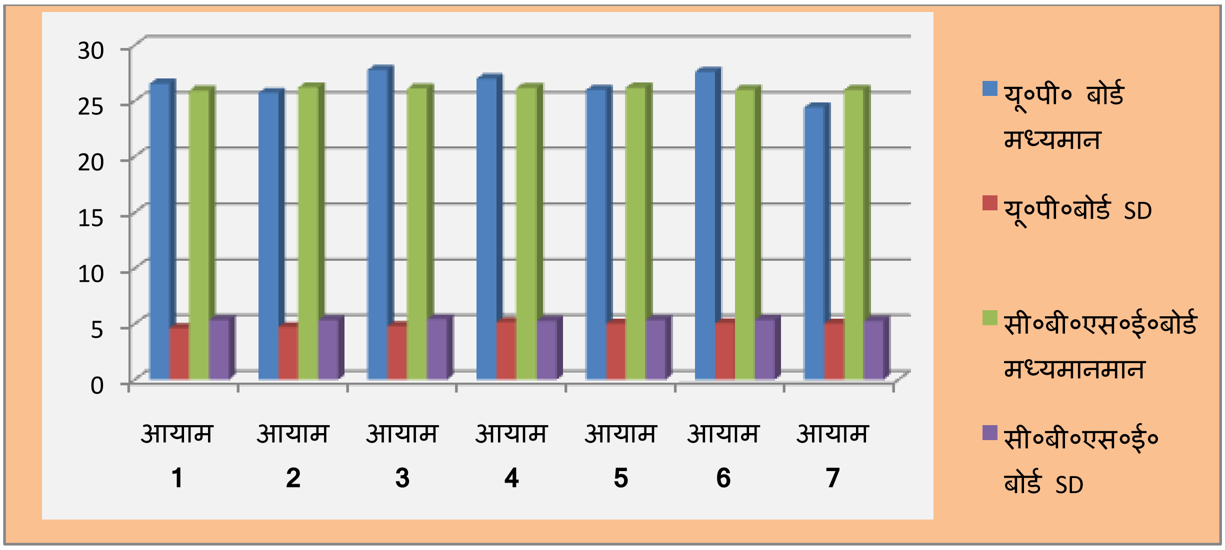

तालिका :4 उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण

	उच्च आर्थिक स्थिति $N_1 = 67$		**निम्न आर्थिक स्थिति** $N_2 = 59$			
आयाम	M_1	SD_1	M_2	SD_2	**t-मान**	**सार्थकता स्तर**
1.अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व	29.074	4.363	24.05	4.446	6.38	सार्थक अंतर है
2.स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास	29.283	4.481	24.135	4.26	6.60	सार्थक अंतर है
3.निर्णय प्रक्रिया	29.236	4.422	24.056	4.229	6.71	सार्थक अंतर है

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

4.भागीदारी	29.299	4.396	24.10	4.212	6.77	सार्थक अंतर है
5.क्षमता विकास	29.28	4.433	24.054	4.197	6.79	सार्थक अंतर है
6.सामाजिक,राजनीतिक व कानूनी जागरूकता	29.293	4.422	24.0	4.287	6.74	सार्थक अंतर है
7.सूचना माध्यमों की उपयोगिता	29.29	4.467	24.21	4.121	6.63	सार्थक अंतर है
कुल मान	**204.75**	**30.987**	**168.60**	**29.752**	**6.68**	**सार्थक अंतर है** |**

तालिका संख्या – 4 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च आर्थिक स्थिति की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं से अधिक है | चूँकि उच्च आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मापे गए सातों आयामों अधिकार एवं स्वतंत्र अस्तित्व, स्वायत्ता एवं आत्मविश्वास, निर्णय प्रक्रिया,भागीदारी, क्षमता विकास, सामाजिक राजनीतिक व कानूनी जागरूकता, सूचना माध्यमों की उपयोगिता तथा समग्र के लिए प्राप्त मध्यमान के मान (क्रमशः 29.074, 29.283, 29.236, 29.299, 29.28, 29.293, 29.29, 204.75) निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के इन आयामों में प्राप्त मध्यमान के मान (क्रमशः 24.05, 24.135, 24.056, 24.10, 24.054, 24, 24.21, 168.60) से अधिक हैं जिससे पता चलता है कि उच्च आर्थिक स्थिति की छात्राएं निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं की तुलना में अधिक सशक्त हैं |

124 स्वतंत्रता कोटि पर दोनों समूहों का टी- मान प्रत्येक आयाम पर 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर के टी- मान से अधिक प्राप्त हुआ जिससे निष्कर्ष निकलता है कि उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में सार्थक अंतर है तथा चतुर्थ शून्य परिकल्पना – "उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य महिला सशक्तिकरण स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है " अस्वीकार हो जाती है |

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ग्राफ – 4 उच्च आर्थिक स्थिति व निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर का आयामों के अनुरूप तुलनात्मक अध्ययन

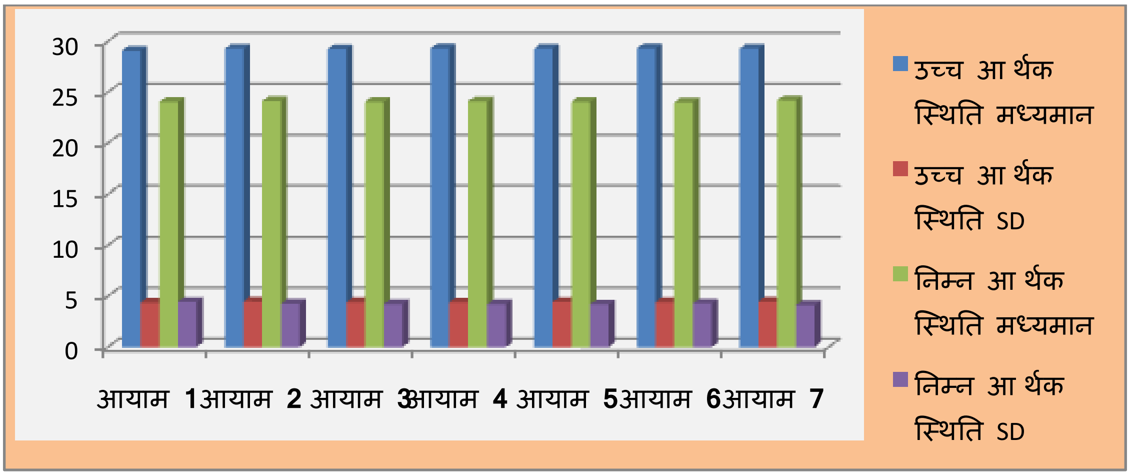

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि धर्म तथा शिक्षा का माध्यम महिला सशक्तिकरण स्तर को प्रभावित नहीं करता है जबकि आर्थिक स्थिति तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्र का प्रभाव सशक्तिकरण स्तर पर पड़ता है | प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएं शहरी क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में कम सशक्त हैं तथा उच्च आर्थिक स्थिति की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर निम्न आर्थिक स्थिति की छात्राओं की तुलना में अधिक है | जबकि हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर तुलनात्मक रूप से समान पाया गया | इसी प्रकार यू०पी० बोर्ड व सी०बी०एस०ई० बोर्ड की छात्राओं के मध्य सशक्तिकरण स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया |

शैक्षिक निहितार्थ :-

प्रस्तुत अध्ययन की कुछ प्रमुख शैक्षिक उपयोगिताएं इस प्रकार हैं –

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता बढाने हेतु सेमीनार, कार्यशाला, गोष्ठियों आदि का आयोजन अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए जिससे किशोरावस्था की छात्राओं का सशक्तिकरण स्तर उच्च होगा तथा भावी पीढियां भी सशक्त हो पायेंगी |
2. विद्यालयों के पाठ्यक्रम में महिला अधिकारों से सम्बंधित विषयों व पाठ्य सामग्री को स्थान दिया जाना चाहिए जिससे बालिकाएं अपने अधिकारों को जान पायेंगी तथा सशक्त बनने हेतु प्रेरित रहेंगी |

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं को अधिक सशक्त बनाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा शिक्षा के माध्यम से जागरूक बनाने का कार्य किया जाना आवश्यक है |
4. बालिकाओं में सशक्तिकरण स्तर को उच्च बनाने के लिए विद्यालयों को विशेष प्रावधान करने चाहिए जैसे- महिला अधिकारों से जुडी जानकारी देना, निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना, जीविकोपार्जन की शिक्षा देना आदि |

REFERENCES:-

Ashraf, N. (2006). Female empowerment : Impact of a commitment savings product in the Philippine. World development, Vol.38(3), pp 333- 334.doi: 10.1061. Retrieved from http://isps.yale.edu/research/publications/isps09-014

Dutta, P.(2014).Study of women's empowerment in the district of Bankura. Retrieved from http://www.shodhganga.inflibnet.ac.in

Hashmi, S.M.(1996).Rural credit programs and women's empowerment in Bangladesh. World development, Vol.24(4),pp635-653.doi:org/10.1016/0305-750x(75)00159-A. Retrieved from https://www.sciencedirect.com

Sharma, P.(2015).बी०एड० प्रशिक्षुओं की स्त्री शिक्षा एवं सुरक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन.एक अप्रकाशित लघु शोध प्रबंध.एम०जे०पी० रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

Sharme, R.A. (2012). शिक्षा अनुसन्धान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ 220-222, 135-140

Shettar, M.R. (2015). A study on issues and challenges of women empowerment in India. IOSR journal of business and management, Volume 17, Issue 4, pp13-19

Shrinivasa, D. (2015).Recent trends in women empowerment : An analysis. International education and research journal, Vol 1, Issue 5

Siwal, B.R..(2008). Gender framework analysis of empowerment of women : a case study of kudumbashree program. Retrieved from http://nipccd.nic.in

Copyright © 2018, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies